B.A Part-1 Paper-1 Topic- Creativity. Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

सृजनात्मकता में व्यक्ति किसी नए एवं मौलिक तथ्य को प्राप्त करने की कोशिश करता है। सृजनात्मकता की कई परिभाषाएं दी गई है। इन परिभाषाओं में इस बात पर बल दिया जाता है कि सृजनात्मकता में कुछ नयी और भिन्न चीजों का निर्माण होता है। अतः व्यक्ति के उत्पादन या उसकी रचना से सृजनात्मकता का मापन किया जा सकता है परंतु हमेशा यह आवश्यक नहीं है कि सृजनात्मकता से उत्पादन ही होता है।

सृजनात्मकता की उचित विस्तृत परिभाषा ड्रेवडाल (1956) ने दी है जो इस प्रकार है-

"सृजनात्मक चिंतन या सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ ऐसी नयी चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है एवं जो पहले से उसे ज्ञात नहीं होता है। यह एक काल्पनिक क्रिया या चिंतन संश्लेषण हो सकता है.... इसमें गत अनुभूतियों से उत्पन्न सूचनाओं का एक नया पैटर्न और सम्मिश्रण सम्मिलित हो सकता है.... यह निश्चित रूप से उद्देश्यपूर्ण या लक्ष्य निर्देशित होता है न कि एक निराधार स्वप्नचित्र होता है... यह वैज्ञानिक,

कलात्मक या साहित्यिक रचना के रूप में हो सकता है”।

इसके अतिरिक्त वेरॉन (Baron,2001) ने भी सृजनात्मकता की एक सटीक परिभाषा दिया है जो इस प्रकार है

“मनोवैज्ञानिकों द्वारा सृजनात्मकता को एक ऐसा कार्य करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है जो नवीन (मौलिक, अप्रत्याशित) तथा उचित (लाभदायक या कार्य अवरुद्धता को दूर करने लायक) दोनों ही होते हैं”।

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर इसके स्वरूप पर स्पष्ट रूप से प्रकाश पड़ता

है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नांकित है:-

- सृजनात्मक चिंतन एक ऐसी प्रक्रिया है जो लक्ष्य निर्देशित होता है इसमें व्यक्ति को लक्ष्य निश्चित रूप से पता होता है और उसका प्रत्येक व्यवहार इसी लक्ष्य से संबंधित होता है व्यक्ति इस ढंग का व्यवहार अपने व्यक्तिगत या सामूहिक लाभ के लिए भी करता है।
- सृजनात्मक चिंतन में व्यक्ति कुछ नया एवं भिन्न चीजों की रचना करता है इसलिए यह उस व्यक्ति के लिए भी अनूठा होता है। इस तरह की अनूठी

रचना शाब्दिक, अशाब्दिक, मूर्त या अमूर्त कुछ भी हो सकता है तथा यह व्यक्ति के लिए लाभदायक भी होता है।

- सर्जनात्मक चिंतन, चिंतन का एक विशेष तरीका है। यह बुद्धि से एक अलग संप्रत्य है क्योंकि बुद्धि में सृजनात्मक चिंतन के अलावा भी अन्य मानसिक क्षमताएं सम्मिलित होती हैं।
- यह क्षमता व्यक्ति द्वारा पहले से प्राप्त सार्थक ज्ञान पर निर्भर करती है। यह सार्थक ज्ञान जितना ही अधिक होगा सृजनात्मकता उतनी ही अधिक होगी।

- सर्जनात्मक रूप से सोचते समय व्यक्ति कुछ अर्थपूर्ण कल्पनाएं करता है। इस अर्थपूर्ण कल्पना का ही परिणाम होता है कि व्यक्ति कुछ वैज्ञानिक, कलात्मक तथा साहित्यिक रचना कर पाता है।